

निवेदन

प्रिय सज्जनो,

हमारे पिता महाकवि गुलाब खंडेलवाल से आप सभी भलीभाँति परिचित हैं. उनके १००० से अधिक भक्तिगीतों में से कुछ गीत जो प्रायः प्रतिदिन घर-घर में गाये जाते रहे हैं, यहाँ संकलित हैं. इन भक्तिगीतों के संकलन में विभा झालानी तथा मुक्ता झालानी और सम्पादन में प्रतिभा खंडेलवाल ने विशेष सहयोग दिया है.

इन गीतों की भाषा अत्यंत सरल तथा धुन सहज है. आशा है, ये गीत आपके भी नित्यप्रति जीवन में स्थान पाएँगे.

विनीत

3477 Hunting Run Road
Medina OH, USA 44256

आनंद खंडेलवाल
फरवरी २१, २०१८

अयि मानस-कमल-विहारिणी !
हंस-वाहिनी ! माँ सरस्वती ! वीणा-पुस्तक-धारिणी !

शून्य अजान सिन्धु के तट पर
मानव-शिशु रोता था कातर
उतरी ज्योति सत्य, शिव, सुन्दर
तू भय-शोक-निवारिणी

देख प्रभामय तेरी मुख-छवि
नाच उठे भू, गगन, चन्द्र, रवि
चिति की चिति तू कवियों की कवि,
अमित रूप विस्तारिणी

तेरे मधुर स्वरों से मोहित
काल अशेष शेष-सा नर्तित
आदि-शक्ति तू अणु-अणु में स्थित
जन-जन-मंगलकारिणी

अयि मानस-कमल-विहारिणी !
हंस-वाहिनी ! माँ सरस्वती ! वीणा-पुस्तक-धारिणी !

Gulab Jayanti 2018

Ayi maanas-kamal-vihaariNee!

Hans-vaahinee! Maan Saraswati!

VeeNa-pustak-dhaariNee!

Shoonya ajaan sindhu ke taT par

Maanav-shishu rota tha kaatar

Utaree jyoti satya, shiv, sundar,

too bhay-shok-nivaariNee

Dekh prabhaamay teri mukh-Chavi

Naach uThe bhoo, gagan, chandra, ravi

Chiti ki chiti too, kaviyon ki kavi,

amit roop vistaariNee

Tere madhur swaron se mohit

Kaal ashesh shesh-sa nartit

Aadi-shakti tu aNu-aNu mein sthit,

jan-jan-mangalakaariNee

Ayi maanas-kamal-vihaariNee!

Hans-vaahinee! Maan Saraswati!

VeeNa-pustak-dhaariNee!

अंतर से मत जाना

यह संसार भुला भी दे पर तुम मन से न भुलाना

भाग्य भले ही मुझसे ऐंठे

कभी, कहीं सुर-ताल न बैठे

फिर भी तुम प्राणों में पैठे

मंद-मंद मुस्काना

बनकर पिता, बंधु, गुरु, सहचर

देते रहना बोध निरंतर

और शेष का पथ आने पर

बढ़कर गले लगाना

अंतर से मत जाना

यह संसार भुला भी दे पर तुम मन से न भुलाना

Antar se mat jaana

Yeh sansaar bhula bhi de par

tum man se na bhulaana

Bhaagy bhale hi mujhse ainThe

Kabhi, kaheen sur-taal na baiThe

Phir bhi tum praaNon mein paiThe

Mand-mand muskaana

Ban kar pita, bandhu, guru, sahchar

Dete rehna bodh nirantar

Aur shesh ka path aane par

BaDhkar gale lagaana

Antar se mat jaana

Yeh sansaar bhula bhi de par

tum man se na bhulaana

करुणामय! तेरी करुणा का भार मधुर झेलूँ कैसे!
चार हाथ से तू देता मैं दो हाथों से लूँ कैसे!

तेरी करुणा बरस रही हैं
बन कर उषा का आलोक
जिससे मुखरित हो कर हँसते
भू-नभ, दिशि-दिशि, तारालोक
गंगा की जिस धवल धार को
गिरिमालायें सकीं न रोक
उसे शीश पर धर ले कैसे
यह नन्ही दूर्वा की नोंक !

तेरी इस विराट वीणा के तारों से खेलूँ कैसे!

करुणामय! तेरी करुणा का भार मधुर झेलूँ कैसे!
चार हाथ से तू देता मैं दो हाथों से लूँ कैसे!

KaruNaamay! Teri karuNa ka

bhaar madhur jheloon kaise!

chaar haath se too deta,

main do haathon se loon kaise!

teri karuNa baras rahi hain

ban kar usha ka aalok

jisase mukharit ho kar hanste

bhoo-nabh, dishi-dishi, taaraalok

Ganga ki jis dhaval dhaar ko

girimaalaayen sakeen na rok

Use sheesh par dhar le kaise

yah nanhi doorva ki nonk

teri is viraat veeNa ke taaron se kheloon kaise!

KaruNaamay! Teri karuNa ka

bhaar madhur jheloon kaise!

chaar haath se too deta,

main do haathon se loon kaise!

कौन-सा रूप ध्यान में लाऊँ!
इतने वेश बदलते स्वामी! किस पर नयन टिकाऊँ!

कभी यशोदा का आँचल धर
माँग रहे माखन रो - रोकर
कभी कुंज में यमुना तट पर
वेणु बजाते पाऊँ

कभी चुराकर माखन खायें
कभी विराट रूप दिखलायें
शेष न होंगी वे लीलायें
जीवन भर भी गाऊँ

किन्तु प्रेम. प्रभु ! कैसा साधा !
ब्रज का मिलन रह गया आधा!
सिसक रही है विरहिन राधा
कैसे उसे मनाऊँ?

Kaun-sa roop dhyaan mein laoon!
Itane vesh badalte Swami !
kis par nayan tikaon!

Kabhi Yashoda ka aanchal dhar
Maang rahe maakhan ro-rokar
Kabhi kunj mein yamuna-taT par
veNu bajaate paon

Kabhi churaa kar maakhan khaayen
Kabhi viraat roop dikhalaayen
Shesh na hongi ve leelaayen
jeevan bhar bhi gaon

Kintu prem, prabhu! kaisa saadha!
Braj ka milan rah gaya aadha!
Sisak rahi hai virhin Radha
kaise use manaon?

जीवन तुझे समर्पित किया
जो कुछ भी लाया था-तेरे चरणों पर धर दिया

पग-पग पर फूलों का डेरा
घेरे था रंगों का घेरा
पर मैं तो केवल बस तेरा-
तेरा होकर जिया

सिर पर बोझ लिये भी दुर्वह
मैं चलता ही आया अहरह
मिला गरल भी तुझसे तो वह
अमृत मान कर पिया

जग ने रत्नकोष है लूटा
मिला तँबूरा मुझको टूटा
उस पर ही, जब भी स्वर फूटा
मैंने कुछ गा लिया

जीवन तुझे समर्पित किया

Jeevan tujhe samarpit kiya
Jo kuCh-bhi laaya tha tere charaNon par dhar diya

Pag-pag par phoolon ka dera
Ghere tha rangon ka ghera
Par main to keval bas tera
tera hokar jiya

Sir par bojh liye bhi durvah
Main chalta hee aayaa ahrah
Mila garal bhi tujhse to vah
amrit maan kar piya

Jag ne ratnakosh hai looTa
Mila tanboora mujhko tooTa
Us par hi, jab bhi swar phooTa
main ne kuCh gaa liya

Jeevan tujhe samarpit kiya

तुझसे तार जुडा है मेरा
और बीच में जो कुछ है सब चलता-फिरता डेरा

प्राण सतत जाते हैं भागे
धरे अजान स्नेह के धागे
मैं बढ़ता जाता हूँ आगे
करता पार अँधेरा

मेरे सुर में झंकृत होगी
विरह-व्यथा जो मैंने भोगी
पा लेंगे ये प्राण वियोगी
परम धाम जब तेरा

जो कल यह सुर दुहरायेगा
अपने पास मुझे पायेगा
यद्यपि पंछी उड़ जायेगा
तोड़ हवा का घेरा

तुझसे तार जुडा है मेरा
और बीच में जो कुछ है सब चलता-फिरता डेरा

tujhse taar juDa hai mera
aur beech mein jo kuCh hai sab chalta-phirta dera

PraaN satat jaate hain bhaage
Dhare ajaan sneh ke dhaage
Main baDhta jaata hoon aage
Karta paar andhera

Mere sur mein jhankrit hogi
Virah-vytha jo mainne bhogi
Pa lenge ye praan viyogi
Param dhaam jab tera

Jo kal yah sur duharaayega
Apne paas mujhe paayega
Yadyapi panChi uD jaayega
ToD hawa ka ghera

tujhse taar juDa hai mera
aur beech mein jo kuCh hai sab chalta-phirta dera

नहीं यदि तू भी दया करेगा
तो फिर इस जलते जीवन की पीड़ा कौन हरेगा !

काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह हैं प्रतिपद घेरा डाले
मुझको भटकाने के तूने कितने मार्ग निकाले
सहज स्वभाव यही शिशु का तो
तिरछे पाँव धरेगा

इन्द्र-कुबेर-मरुत-पावक-जल तेरे जड़ अनुचर हैं
भले-बुरे के ज्ञान-रहित, नियमों के पालक भर हैं
इनका बस चलते तो कोई
पापी नहीं तरेगा

तेरी क्षमा बड़ी है मेरे कर्मों के बंधन से
शाप-ताप सब धुल जायेंगे अश्रु-सजल आनन से
जब तू मेरा क्रंदन सुनकर
धरती पर उतरेगा

प्रतिदिन, प्रतिपल, साथ तुम्हारे
मेरा जीवन हाथ तुम्हारे

मन के स्वामी ! अंतर्यामी !
तुम रख लो पत, कौन उतारे!

तुमसे जग को मैंने जाना
तुमसे पाया जो था पाना
मेरा हँसना, रोना-गाना
सब में एक तुम्हीं-तुम प्यारे !

साँस - साँस में बजती पायल
जो कुछ सुन्दर जो कुछ निर्मल
ज्योति तुम्हारी से ही झलमल
दिन में फूल, रात में तारे

तुम उदार, करुणा के सागर
सब गुण-आगर, हे नट नागर!
भर दो मन की रीती गागर
चरण शरण मैं, नाथ ! तुम्हारे

Pratidin, pratipal, saath tumhaare
Mera jeevan haath tumhaare
Man ke swami! antaryaami!,
Tum rakh lo pat, kaun utaare

Tumse jag ko mainne jaana
Tumse paaya jo thaa paana
Mera hansna, rona-gaana
sab mein ek tumheen-tum pyaare!

Saans-saans mein bajti paayal
Jo kuCh sundar, jo kuCh nirmal
Jyoti tumhaari se hi jhalmal
din mein phool, raat me taare

Tum udaar, karuNa ke saagar
Sab guN aagar, hey naT naagar!
Bhar do man ki reetee gaagar,
charan sharan main, naath! tumhaare

बरसो, हे करुणा के जलधर !
मुझे बहा ले चलो, नाथ ! आनंद-सिन्धु के तट पर !

मेरे मन-प्राणों पर प्रतिक्षण
बरसो सावन की फुहार बन
धन्य बने, प्रभु ! मानव-जीवन
कृपा तुम्हारी पाकर

देखूँ झाँकी वृन्दावन की
राधा-माधव-प्रीति मिलन की
मैंने जो छवि युगल वरण की
गीतों में हो भास्वर

बरसो यों ! मेरे अंतर से
फूट चले स्वर के निर्झर-से
अक्षर-अक्षर से रस बरसे
रुके न धारा पल भर

Gulab Jayanti 2018

Baraso, hey karuNa ke jaldhar!

Mujhe baha le chalo, naath!

anand-sindhu ke taT par!

Mere man-praaNon par pratikShaN

Baraso saavan ki phuhaar ban

Dhanya bane, prabhu! maanav-jeevan

kripa tumhaari paakar

Dekhoon jhaanki vrindaavan ki

Radha-madhav-preeti milan ki

Mainne jo Chavi yugal varan ki,

geeton mein ho bhaaswar

Barso yon! mere antar se

PhooT chale swar ke nirjhar-se

AkShar-akShar se ras barase

ruke na dhaara pal bhar

बिगड़ी बात बनाते हो तुम
जहाँ चरण डिगते हैं मेरे, हाथ पकड़ ले जाते हो तुम

यद्यपि सम्मुख कभी न मेरे नाम रूप में आते हो तुम
पर लगता, कन्धों के पीछे सदा खड़े मुस्काते हो तुम

बाती, स्नेह, प्रदीप तुम्हीं हो, जलते और जलाते हो तुम
उजियारे का श्रेय दिला कर मेरा मान बढ़ाते हो तुम

मेरी साँसो की धड़कन में अपनी साँस मिलाते हो तुम
मैं वैसे ही नाच रहा हूँ जैसा नाच नचाते हो तुम

लो मेरा 'मैं' भी यह ले लो जिससे यों भरमाते हो तुम
अब किसका देना ! क्या लेना ! तुम देते हो, पाते हो तुम

BigaDi baat banaate ho tum

Jahaan charan digate hain mere,

haath pakaD le jaate ho tum

Yadyapi sammukh kabhi na mere

naam roop mein aate ho tum

Par lagta, kandhon ke peeChe

sada khaDe muskaate ho tum

Baati , sneh, pradeep tumheen ho,

jalte aur jalaate ho tum

Ujiyaare ka Shreya dila kar

mera maan baDhaate ho tum

Meri saanso ki dhaDkan mein

apni saans milaate ho tum

Main vaise hi naach raha hoon

jaisa naach nachaate ho tum

Lo mera 'main' bhi yah le lo

jisse yon bharmaate ho tum

Ab kiska dena! Kya lena!

tum dete ho, paate ho tum

भगवती, आद्याशक्ति, भवानी !

ढूँढ थके विधि, हरि, हर, तेरी लीला किसने जानी !

अनस्तित्व था पडा अचेतन

महाशून्य में प्रथम नाद बन

तूने ही कर यह सम्मोहन

जग रचने की ठानी

अगणित ब्रह्मांडों को घेरे

नियम अकाट्य अड़े हैं तेरे

मिटे सृष्टि यदि तू मुँह फेरे

करने दे मनमानी

लाख कल्पनायें दौड़ाऊँ

क्या तेरी महिमा कह पाऊँ !

वर दे बस, गुण गाता जाऊँ

धन्य करूँ निज वाणी

Bhagvati, aadyashakti, bhavaani!

DhoonDh thake vidhi, hari, har,

teri leela kisne jaani!

Anastitv tha paDa achetan

Mahaashoonya mein pratham naad ban

toone hi kar yah sammohan

jag rachne ki Thaani

Aganit brahmaanDon ko ghere

Niyam akaaTya aDe hain tere

MiTe SriShTi yadi too munh phere,

karne de manmaani

Laakh kalpanaayen dauDaon

Kya teri mahima kah paon!

Var de bas, guN gaata jaoon

dhany karoon nij vaaNi

मुझे भी अपना दास बनाओ
देखूँ जिधर, तुम्हें ही देखूँ, ऐसी लगन लगाओ

दिखो निखिल भू-व्योम-निलय में
नयन मुँदे तो दिखो हृदय में
मेरे जीवन की हर लय में

अपनी तान मिलाओ

जिस पर मुनियों ने मन टेका
वह रस, राग, रूप अनदेखा
वह अदृश्य चरणों की रेखा

मुझको भी दिखलाओ

क्षुद्र अहं का घेरा टूटे
कण-कण से रस-निर्झर फूटे
वह बल दो, जिस क्षण तन छूटे

मुझे विहँसता पाओ

Mujhe bhi apna daas banao
Dekhoon jidhar, tumhen hi dekhoon ,
aisi lagan lagao

Dikho nikhil bhoo-vyom-nilay mein
Nayan munde to dikho hriday mein
Mere jeevan ki har lay mein
Apni taan milao

Jis par muniyon ne man Teka
Vah ras, raag, roop andekha
Vah adriShy charNon ki rekha
Mujhko bhi dikhlao

KShudra aham ka ghera TooTe
KaN-kaN se ras-nirjhar phooTe
Vah bal do, jis kShan tan ChooTe
Mujhe vihansta pao

मेरे अंतर में छा जाओ
जनम-जनम की प्यास बुझे, प्रभु ! ऐसा रस बरसाओ

कितने भी दो आगे - आगे
शिशु को राज-भोग मुँहमाँगे
अपने घर की सुधि जब जागे
उनसे भुला न पाओ

बीत गये दिन खेल खिलाते
कभी हँसाते, कभी रुलाते
क्यों पल भी जो ठहर न पाते
वही खिलौने लाओ

पत रख ली तुमने मीरा की
मिली सूर को बाँकी झाँकी
तुलसी ने मानस में आँकी
जो छवि, मुझे दिखाओ

मेरे अंतर में छा जाओ
जनम-जनम की प्यास बुझे, प्रभु ! ऐसा रस बरसाओ

Mere antar mein Cha jao
Janam-janam ki pyaas bujhe, prabhu!
aisa ras barsao

Kitne bhi do aage-aage
Shishu ko raaj-bhog munhamaange
Apne ghar ki sudhi jab jaage
Unse bhula na pao

Beet gaye din khel khilaate
Kabhi hansaate, kabhi rulaate
Kyon pal bhi jo Thahar na paate
Vahi khilaune lao

Pat rakh li tumne meera ki
Mili soor ko baanki jhaanki
Tulsi ne maanas mein aanki
Jo Chavi, mujhe dikhao

मैंने तेरी तान सुनी है

शांत विज्ञान में
सुमन-सुमन में
हर तरु-तृण में
लय अनजान सुनी है

दूर गगन में
तारागण में
है त्रिभुवन में
जो गतिवान, सुनी है

अपने मन में
हर धड़कन में
आकुल क्षण में
रचते गान सुनी है

मैंने तेरी तान सुनी है

Mainne teri taan suni hai

Shaant vijaN mein

Suman-suman mein

Har taru-triN mein

Laya anjaan suni hai

Door gagan mein

taara-gaN mein

Hai tribhuvan mein

Jo gativaan, suni hai

Apne man mein

Har dhaDkan mein

Aakul kShaN mein

Rachate gaan suni hai

Mainne teri taan suni hai

यदि मैं तुम्हें भूल भी जाऊँ लहरों की हलचल में
तो भी छोड़ न देना मुझको

मेरे नाथ ! अतल में

धीरे-धीरे हाथ बढ़ा कर
मुझे खींच लेना तुम बाहर
मिट जाये मिट जाने का डर
जल की उथल-पुथल में

लेना-देना, पाना-खोना
रहे न फिर यह रोना-धोना
सहज-सहज हो, जो है होना
उस अनजाने पल में

Yadi main tumhein bhool bhi jaoon
lahron ki halchal mein
To bhi ChoD na dena mujhko
mere naath! atal mein

Dheere-dheere haath badha kar
Mujhe kheench lena tum baahar
MiT jaaye miT jaane ka Dar
jal ki uthal-puthal mein

Lena-dena, paana-khona
Rahe na phir yah rona-dhona
Sahaj-sahaj ho, jo hai hona
us anjaane pal mein

सब कुछ कृष्णार्पणम्, सब कुछ कृष्णार्पणम्

ज्ञान-ध्यान, शक्ति-श्रम, राग-द्वेष, मोह-भ्रम
दाह-दीनता-अहम्, सब कुछ कृष्णार्पणम्

भोग-योग, यम-नियम, श्रेय-प्रेय, प्रेयतम
लाभ-हानि, सम-विषम, सब कुछ कृष्णार्पणम्

भव-विभव, अधिक कि कम, शिव-अशिव, शुभाशुभम्
प्राप्त जो अगम-सुगम, सब कुछ कृष्णार्पणम्

सत्, असत्, अहम्, इदम्, वृत्ति उच्च या अधम
सुंदरम्, असुन्दरम् सब कुछ कृष्णार्पणम्

व्यर्थ जन्म-मृत्यु-क्रम, ईति-भीति, त्रास-तम
रोग-शोक, दुख चरम सब कुछ कृष्णार्पणम्

भेद बुद्धि के अलम् जप-तप आगम-निगम
मन्त्र अब यही परम, सब कुछ कृष्णार्पणम्

पाँव क्यों न जायँ थम, मार्ग चल रहा स्वयम्
मुक्त, आज मुक्त हम, सब कुछ कृष्णार्पणम्

Sab kuCh kriShNaarpaNam,
sab kuCh kriShNaarpaNam
Gyaan-dhyaan, Shakti-Shram,
raag-dvesh, moh-bhram
daah, deenataa, aham sab kuCh kriShNaarpaNam
Bhog-yog, yam-niyam Shreya-preya, preytam
Laabh-haani, sam-viSham
sab kuCh kriShNaarpaNam
Bhav-vibhav, adhik ki kam
shiv-aShiv, ShubhaaShubham
Praapt jo agam-sugam sab kuCh kriShNaarpaNam
Sat, asat, aham, idam, vritti uchch ya adham
Sundaram, asundaram sab kuCh kriShNaarpaNam
Vyarth janm-mrityu-kram eeti-bheeti, traas-tam
Rog-shok, dukh charam sab kuCh kriShNaarpaNam
Bhed buddhi ke alam jap-tap aagam-nigam
Mantra ab yahi param sab kuCh kriShNaarpaNam
Paanv kyon na jaayn tham maarg chal raha swayam
Mukt, aaj mukt ham sab kuCh kriShNaarpaNam

सहज हो प्रभु साधना हमारी

सहज हो जीवन और सहज हो मरण

सहज सदा चिंतन हो, सहज आचरण

सहज-सहज कर लें हम वरण वे चरण

शरण-क्लेशहारी

आतप-हिम-वाट सभी हँस-हँसकर सहें

जैसे तू रखता हो वैसे ही रहें

तेरी ही सुनें और तुझसे ही कहें

भार हो न भारी

Sahaj ho prabhu saadhna hamaari

sahaj ho jeevan aur sahaj ho maraN

sahaj sada chintan ho, sahaj aacharaN

sahaj-sahaj kar len ham varaN ve charaN

SharaN-kleShahaari

Aatap-him-vaat sabhi hans-hansakar sahen

Jaise tu rakhta ho vaise hi rahen

teri hi sunen aur tujhse hi kahen

bhaar ho na bhaari

हे प्रभु ! सब अपराध हमारे क्षमा करो
हम अबोध शिशु नाथ तुम्हारे, क्षमा करो
लोभ - मोह - वश, जाने या अनजाने में
दोष हुए जो बिना विचारे, क्षमा करो

भूले मन्त्र त्याग के सारे, क्षमा करो
भोग किये प्राणों से प्यारे, क्षमा करो
अर्थ-काम के रथ में अविरत जुते रहे
हम अपने ही मन से हारे, क्षमा करो

थे अनीति पर चुप्पी धारे, क्षमा करो
डिगे सत्य से भय के मारे, क्षमा करो
चिर-अहेतुकी कृपा तुम्हारी पाकर भी
फिरे जगत में हाथ पसारे, क्षमा करो

नहीं सूझते कहीं किनारे, क्षमा करो
संकट से अब कौन उबारे, क्षमा करो
सब से थक कर शरण तुम्हारी आये हैं
हे आशाओं के ध्रुवतारे ! क्षमा करो

विकल हृदय अब किसे पुकारे ! क्षमा करो
तुम्हीं शेष के एक सहारे, क्षमा करो
क्षमा करो, हे क्षमासिन्धु ! भवभय-हर्ता !
हे करुणामय पिता हमारे ! क्षमा करो

Hey prabhu! Sab apraadh hamaare kShama karo
Hum abodh shishu naath tumhaare, kShama karo
Lobh-moh-vash, jaane ya anjaane mein
DoSh hue jo bina vichaare, kShama karo
 Bhoole mantra tyaag ke saare, kShama karo
 Bhog kiye praaNon se pyaare, kShama karo
 Arth-kaam ke rath mein avirat jute rahe
 Hum apne hi man se haare, kShama karo
thei aneeti par chuppi dhaare, kShama karo
Dige satya se bhaya ke maare, kShama karo
Chir-ahetuki kripa tumhaari paakar bhi
Phire jagat mein haath pasaare, kShama karo
 Nahin soojhte kaheen kinaare, kShama karo
 SankaT se ab kaun ubaare, kShama karo
 Sab se thak kar SharaN tumhaari aaye hain
 Hey aashaon ke dhruv taare! KShama karo
Vikal hriday ab kise pukaare! KShama karo
Tumheen sheSh ke ek sahaare, kShama karo
KShama karo, hey kShama-sindhu! Bhavbhayharta!
Hey karuNaamay pita hamaare! KShama karo

शरण में, माँ ! मुझको भी ले ले
रहूँ कहीं भी पर मन तेरे आँगन में ही खेले

क्यों मैं द्वार-द्वार नित डोलूँ !
जन-जन के आगे मुँह खोलूँ !
तेरे ही चरणों में रो लूँ
जब दुःख जायें न झेले

तेरे स्नेहांचल में पलकर
जीवन होता जाय पूर्णतर
पथ कितना भी दुर्गम हो, पर
रहें न प्राण अकेले

निर्भय रहूँ देख अंतर में
तुझे आयु के शेष प्रहर में
लगे कि लौट रहा हूँ घर में
छोड़ जगत के मेले

SharaN mein, maa! Mujhko bhi le le

Rahoon kaheen bhi par man

tere aangan mein hi khele

Kyon main dvaar-dvaar nit Dooloon !

Jan-jan ke aage munh kholoon !

tere hi charaNon mein ro loon

Jab dukh jaayen na jhele

tere snehaanchal mein palkar

Jeevan hota jaay poorNtar

Path kitana bhi durgam ho, par

Rahen na praaN akele

Nirbhay rahoon dekh antar mein

Tujhe aayu ke sheSh prahar mein

Lage ki lauT raha hoon ghar mein

ChhoD jagat ke mele

छोड़ मत देना पथ के बीच
मुझे भटकते देख नाथ मत आँखें लेना मींच
ज्यों अब तक पथ लगा न भारी
पा अहेतुकी कृपा तुम्हारी
त्यों ही आगे भी, गिरधारी !

हाथ न लेना खींच

मैंने जग का सुर भी साधा
अंतिम तार तुम्हीं से बाँधा
राग भले ही गूँजा आधा

रसघट दिए उलीच

पर जाने क्यों अब मन मेरा
शंकित सम्मुख देख अँधेरा
चिंता, भय, दुविधा ने घेरा

सूझे ऊँच न नीच

ChoD mat denaa path ke beech

Mujhe bhatakte dekh naath mat aankhen lenaa
meech

Jyon ab tak path laga na bhaari

Pa ahetuki kripa tumhaari

tyon hi aage bhi, girdhaari!

Haath na lena kheench

Mainne jag ka sur bhi saadha

Antim taar tumheen se baandha

Raag bhale hi goonja aadha

Rasghat diye uleech

Par jaane kyon ab man mera

Shankit sammukh dekh andhera

Chinta, bhay, duvidha ne ghera

Soojhe oonch na neech

कहाँ है ओ अनंत के वासी !

तू मन में हो फिर भी आँखें हैं दर्शन की प्यासी

ओ अनंत के वासी !

प्रेम-शक्ति के तार भले ही मैंने मन में बाँधे

रह-रहकर उठ रहे विवादी सुर भी उनसे आधे

नयनों के सम्मुख दिखती है मुझको अंध गुफा-सी

ओ अनंत के वासी !

कितनी बार परस तेरा मैंने मस्तक पर पाया

कितनी बार डूबते मुझको तू तट पर ले आया

क्यों फिर भी हटती न हटाये चिंता की गलफाँसी?

ओ अनंत के वासी !

नियम-नियामक दोनों तू नियमों का हो दृढ पालक

पर न नियम क्या बने क्षमा के, भूल करे यदि बालक

गिरते-पड़ते भी जो तुझ तक आने का अभिलाषी ?

ओ अनंत के वासी !

कहाँ है ओ अनंत के वासी !

तू मन में हो फिर भी आँखें हैं दर्शन की प्यासी

ओ अनंत के वासी !

- ❖ महाकवि गुलाब खंडेलवाल की ६४ पुस्तकें प्रकाशित हैं तथा एक पुस्तक प्रकाशनाधीन है.
- ❖ उनके महाकाव्य 'उषा' तथा खंडकाव्य 'कच-देवयानी' महाविद्यालय के पाठ्यक्रम में रह चुके हैं.
- ❖ उनका खंडकाव्य 'आलोकवृत्त' सन् १९७६ से उत्तर प्रदेश के इंटरमीडिएट के पाठ्यक्रम में है.
- ❖ उनके काव्य के विभिन्न अंगों पर सन् १९६६ से PhD के लिए शोध प्रारम्भ हुआ और अब तक सात लोगों को PhD की उपाधि मिल चुकी है. इस समय भी नागपुर विश्वविद्यालय (मध्य प्रदेश), सीकर विश्वविद्यालय (राजस्थान) तथा मगध विश्वविद्यालय (बिहार) से PhD के लिए तीन और शोध हो रहे हैं.
- ❖ महाकवि गुलाब खंडेलवाल को देश-विदेश में विभिन्न प्रकार के सम्मान मिले हैं.
- ❖ उन्होंने विभिन्न विधाओं में काव्य-रचना की है. इनमें से कई विधाओं को तो उन्होंने पुनर्जीवित किया और कई विधाओं का सूत्रपात किया है.
- ❖ महाकवि गुलाब खंडेलवाल द्वारा प्रयुक्त विधाएँ इस प्रकार हैं --- महाकाव्य, खंडकाव्य, गीत, सॉनेट, रुबाई, दोहे, सम्बोधि-गीत, गडेरिये के गीत, प्रतीक काव्य (Elgy), गाथा काव्य (Lyrical Ballads), गीति-नाट्य (Poetic Drama), हिन्दी तथा उर्दू की गज़ल, नई शैली की (मुक्तछन्द तथा छंदमुक्त) कविता, मसनवी आदि.
- ❖ उन्होंने लगभग ४०० गज़लें तथा १००० से अधिक भक्तिगीतों की रचना की है.